एग्री आर्टिकल्स
(कृषि लेखों के लिए ई-पत्रिका)
वर्ष: 06, अंक: 01 (जनवरी-फरवरी, 2026)
www.agriarticles.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री आर्टिकल्स, आई. एस. एस. एन.: 2582-9882

स्वयं सहायता समूह में पॉटपोरी का व्यवसाय

*मणि प्रकाश शुक्ल एवं प्रो. कल्याण घडेइ
प्रसार शिक्षा विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय
*संवादी लेखक का ईमेल पता: shuklamp@bhu.ac.in

वर्तमान समय में देश में समानता लेन के तरफ अनेको प्रयास किये जा रहे है और लिंगभेद को दूर किये बिना समानता की बात करना असंभव है । देश की सर्वांगीण उन्नति हो सके इसके लिए विभिन्न सरकारी सस्थाओ, गैर सरकारी संस्थानों और स्वयं केंद्र और राज्य सरकार द्वारा महिला सशक्तिकरण के लिए अनेको कार्यक्रम चल रहे है। इसमें स्वयं सहायता समूह बहुत ही कारगर योजना शाबित हुआ है जो महिलाओ के आर्थिक समानता को बढ़ावा दे रहा है । इसमें महिलाओ का समूह खुद के छोटे छोटे निवेशों को एकत्रित करके कोई भी आर्थिक गतिविधि शुरू करती है और लाभ को सदस्यों में अनुपातिक रूप में बाट दी जाती है । चुकी समूह का निवेश क्षमता छोटा होता है अतः यह ऐसे व्यवसाय की आवस्यकता होती है जिसमे निवेश कम से कम तथा कम तकनिकी कार्य वाला हो और अच्छा मुनाफा दे सके । पॉटपोरी का व्यवसाय एक अच्छा विकल्प है, जिसमे निवेश बहुत ही कम तथा बनाने की विधि भी आसान है थोड़ी सी प्रशिक्षण से महिलाये इसे आसानी से सीख जाती है । इसका विपणन भी आसान है, वर्तमान समय (कोरोना कल के बाद) ऑनलाइन बाजार का चलन बहुत ही तेजी से बढ़ा है और वैश्विक बाजार भी नया रूप ले लिया है । ऐसे में अगर स्वयं सहायता समूह के व्यवसाय को ई–कॉमर्स बाजार में बेचा जाये तो उत्पाद की मांग बढ़ने के साथ ही उचित मूल्य भी प्राप्त होगा और महिलाओ को उनकी अलग पहिचान भी मिलेगी । अतः ई – बाजार में स्वयं सहायता समूहों द्वारा पोटपोरी का व्यवसाय महिलाओ को आर्थिक रूप से सशक्त करने का एक अच्छा विकल्प है ।

मुख्य शब्द – महिला सशक्तिकरण, स्वयं सहायता समूह, पॉटपोरी, ई–कॉमर्स बाजार।

महिला सशक्तिकरण और स्वयं सहायता समूह

किसी भी समाज के विकास में ५० प्रतिशत योगदान महिलाओ का होता है । भारत एक पितृसत्तात्मक देश है यहाँ महिलाओ को देवी का दर्जा तो प्राप्त है परन्तु आर्थिक एवं राजनैतिक क्षेत्र में इनकी सहभागिता को हमेशा ही प्रतिबंधित दृष्टि से ही देखा गया है । महिलाओ को सशक्त किये बिना राष्ट्र का विकास और समाज में समानता एक कल्पना मात्र है। अतः महिला सशक्तिकरण से आशय महिलाओ को इतना सक्षम व शक्तिशाली बनाने से है जिससे की वे अपने जीवन से जुड़ी फैसले स्वयं से ले सके तथा समाज व परिवार के उन्नति में अपना सहयोग दे सके । यह तभी संभव है जब महिलाये आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर हो स्वयं सहायता समूह इसमें महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।

स्वयं सहायता समूह एक अनौपचारिक समूह होता है जिसमे लोग अपनी समस्याओ को दूर करने के लिए एक साथ कार्य करते है । भारत सरकार एवं विभिन्न राज्य सरकारे ग्रामीण उत्थान के लिए बहुत सारे कार्यक्रम संचालित कर रही है इसके बावजूद भी देश में बेरोजगारी बढ़ी है तथा और भी अधिक विकराल रूप लेती जा रही है । देश की कुल आबादी का २६ प्रतिशत जनसँख्या अभी भी गरीबी रेखा से निचे है । बेरोगारी को छोटे व्यवसाओं से ही कम किया जा सकता है परन्तु व्यवसाय में निवेश के लिए छोटे व सीमांत किसानो के पास ऋण लेने की भी क्षमता नहीं है । ऐसे में स्वयं सहायता समूह निवेश बढ़ाने का एक अच्छा विकल्प है।

स्वयं सहायता समूह कार्य कैसे करता है ?

स्वयं सहायता समूह १०–२० सदस्यों का एक समूह होता है जो अपने सदस्यों के बिच छोटी बचता को बढ़ावा देता है और यह बचत बैंक में समूह के न से एक कॉमन फण्ड के रूप में जमा की जाती है। जब किसी सदस्य को धन की आवश्यकता पड़ती है तो समूह उसे अपने सामान्य कोष से छोटे ऋण के रूप में धनराशि बहुत ही न्यूनतम व्याज दर पर देती है।

इस समूहों द्वारा सामान्य कोष का उपयोग करके बड़ी व्यवसाय भी चलायी जाती है जिससे सभी सदस्यों को रोजगार भी प्राप्त होता है। इसमें सरकार तथा अन्य संस्थाए भी इनका सहयोग करती है।

हल ही में सरकार ने अपनी वजट २०१९– २० में स्व० स० स० को बढ़ावा देने के लिए इसके व्याज सब्सिडी कार्यक्रमों में विस्तार किया है तथा सदस्यों को ५००० रुपये तक अतिरिक्त निकाशी की सुविधा दिया है।

१९७० के दशक में बांग्लादेश में प्रो० मोहम्मद यूनुस का योगदान अविस्मरणीय है। उन्होंने स्व० स० स० को जीवंत रूप दिया और इसके लिए इन्हे नोबेल पुरस्कार भी दिया गया।

भारत में आर्थिक उदारीकरण (१९९१– ९२) के दौरान स्व० स० स० को विशेष प्रोत्साहन मिला जिसमे नाबार्ड की भूमिका प्रमुख रही । ९वीं पंचवर्षीय योजना (१९९७– २००२) के दौरान स्व० स० स० को जमीनी स्तर पर विकासात्मक योजनाओ के कार्यान्वयन के उपयोग में लाया गया।

नाबार्ड के मुताबिक – भारत में २.३ करोड़ स्व० स० स० कार्यरत है जो ३३ करोड़ सदस्यों का प्रतिनिधित्व करते है। ये SHG बैंक लिंकेज कार्यक्रम के तहत बैंको से उधर लेते है।

स्वयं सहायता समूह के लाभ

- महिलाये बढ़ चढ़ कर भाग लेती है जिससे उनमे सकारात्मक बदलाव देखा जा रहा है।
- छोटी बचता से एक नियमित कोष बना लेते है जिसका उपयोग आपातकालीन में समय में हो पाता है।
- कोष से ग्रामीण आधारित लघु या सूक्षम उद्योग की शुरुआत भी करते है जिससे रोजगार के नए अवसर सृजित होती है।
- समूह में नेतृत्व क्षमता का विकाश होता है।
- बैंको द्वारा ऋण भी दिया जाता है जिससे समूह का लेन दें आसान हो जाता है।
- इससे सदस्यों का दूसरे वित्तीय संस्थाओ पर निर्भरता काम हो जाती है।

ग्रामीण उद्योगों को बढ़ावा देने के लिए कुछ अन्य सरकारी प्रयास

१. दीनदयाल अंत्योदय योजना :– यह राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन के तहत महिलाओ को स्वावलम्बी बनाने के दिशा में उल्लेखनीय कार्य है । इसकी शुरुआत २०११ में हुआ तथा २०१८ तक यह २६ राज्यों व् ५ केंद्रशासित प्रदेशो 4456 ब्लाकों तक प्रसार कर चूका है। इसके अंतर्गत स्व० स० स० को ऋण देने पर बल दिया गया ताकि ग्रामीण उद्यमों को बढ़ाया जा सके ।

२.कौसल विकाश योजना :– इसके अंतर्गत 56 लाख युवाओ को प्रशिक्षित किया गया है जिसमे करीब २४ लाख युवा आपने हुनर के क्षेत्र में रोजगार या स्वरोजगार कर रहे है। इसको १२००० करोड़ बजट के साथ युवाओ व महिलाओ में उद्यमिता को बढ़ाने के उद्देश्य से शुरू किया गया था ।

३. प्रधान मंत्री मुद्रा योजना :– इसमें लघु उद्यमियों को बैंको द्वारा न्यूनतम व्याज दर पर ऋण दिया जाता है । वर्ष २०१८ तक ८.१६ करोड़ लोगो ने ऋण लिया है जिसमे ३.२४ लाख करोड़ रुपये वितरित किये गए है । इसमें लगभग ७०: महिलाये है यानि लगभग ६ करोड़ महिलाओ ने लाभ लिया है ।

४. राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन :– यह विश्व बैंक द्वारा पोषित कार्यक्रम है । इसका उद्देस्य ग्रामीण क्षेत्रो में गरीब वर्गों को दक्ष एवं प्रभावशाली मंच प्रदान करना और स्थायी जीविकोपार्जन में वृद्धि एवं वित्तीय सेवाओं की उअपलब्धता में सुधर करना है ।

पॉटपोरी

पॉटपोरी विभिन्न प्रकार के फूलो, पत्तियों, फलो, गोंद, व सुगन्धित तेलों का मिश्रण होता है जो की सुगंध से भरा होता है इनका उपयोग कमरों को तरोताजा सुगन्धित रखने के लिए तथा उपहार देने के लिए किया जाता है ।

परंपरागत रूप में पॉटपोरी दो प्रकार के होते है –

१. हरे पॉटपोरीया
२. सूखे पॉटपोरीया

परन्तु सूखे पॉटपोरी सबसे अच्छी होती है अतः हम उसी पर ज्यादा बल देते है ।

गंध चिकित्सा वर्तनाम में एक नया पद्धति के रूप में उभर रहा है । विभिन्न प्रकार के गंध का प्रभाव अलग अलग होता है जिसका प्रयोग गंध चिकित्सा में उपचार में किया जाता है । इसके कुछ उदहारण निम्नलिखित है –

१. लैवेंडर गंध से मानशिक शांति
२. रोजमेरी सुगंध से कायाकल्प
३. पुदीना सुगंध से ताजापन आदि

पॉटपोरी बनाने के लिए आवश्यक सामग्री

१. विभिन्न प्रकार के फूल, फल, पत्तिया, आदि
२. रंग
३. गोंद
४. कैची
५. ओवन की ट्रे
६. अरारोट पाउडर
7. वायुरोधी डब्बे
८. बिभिन्न प्रकार के मसाले व सुगंध वाली जड़ी बुटिया
९. पैकिंग के लिए कटोरे या थैलिया
१०. टैग व अन्य आवश्यक सामग्री ।

पॉटपोरी बनाने की विधि

१. मूल सामग्री को एकत्रित करना :– पॉटपोरी बनाने की विधि बहुत ही आसान है इसके लिए सबसे पहले हम मूल सामग्री जैसे आकर्षक फूल, सुन्दर फल, पत्तिया ,रंग बिरंगी छोटे फूल, निम्बू की छिलके, मसाले, सुगन्धित जड़ी बुटिया और उनकी जड़े, पेड़ो के छाल आदि व अन्य आकर्षाक दिखने वाली वस्तुए जैसे बेरिया, मक्के का भुट्टा,छोटे पत्थर ,छोटी गेंदे आदि को एकत्रित करते है।

२. सुखना :– उपरोक्त वस्तुओ को हम उचित विधि द्वारा सुखाते है , इनको सूखने की मुख्यतः दो विधिया है –

क . सूर्य के प्रकाश में :– इसमें वस्तुओ को पतली परत में बिछा कर या रस्सी पर लटकाकर सूर्य के खुली रोशनी में छोड़ देते है।

ख. ओवन में :– इस विधि में हम वस्तुओ को ओवन ट्रे में रख कर उचित तापमान सेट करके उचित समय के लिए छोड़ देते है ताकि वास्तु की नहीं खतम हो जाये ।

३. रंगना :– जो वस्तुए सूखने के बाद भद्दी दिख रही होती है ऐसे वस्तुओ को हम आकर्षक रंगो से रंग देते है ताकि पॉटपोरी दिखने में आकर्षक लगे।

४. गोंद व सुगन्धित तेलों को मिलाना :– रंगो के अच्छे प्रकार से सुख जाने के बाद वस्तुओ को एक ट्रे में पतली परत में बिछा देते है और उसमे चिपकने वाली वस्तुए (गोंद) जैसे – अरारोट पाउडर, दालचीनी, लवंग आदि के तेल का छिड़काव करते है और उसके वजन के अनुसार सुगन्धित तेल की बुँदे मिलाते है और इसे वायुरोधी डब्बे में बंद करके उसे अच्छे से मिलाते है।

५. पैकिंग और टैगिंग :– अच्छे प्रकार से मिले हुए पॉटपोरी को कटोरे में या थैलियों में भर देते है तथा इसपर अपनी कंपनी का टैग लगा देते है।

इस प्रकार से तैयार पॉटपोरी विपणन के लिए तैयार हो जाती है।

बनाने में सावधानिया

- कार्य करते वक्त हाथो में दस्ताने पहने रहे
- सामग्री को अच्छी प्रकार से सूखा ले
- किसी भी तीक्ष्ण गंध वाली वास्तु या तेल का प्रयोग न करे
- जिस सुगन्धित तेल का प्रयोग कर रहे है उसके फूल या पौधे के अन्य भाग को पॉटपोरी में इस्तेमाल न करे ।
- सामग्री को स्वच्छ व सूखे डब्बो में रखे तथा इसे ठंढे व सूखे जगह पर भंडारित करे
- किसी भी जहरीली वास्तु का प्रयोग न करे तथा बच्चो की पहुंच से दूर रखे।

पॉटपोरी के उपयोग

- कमरे को तरोताजा रहने के लिए
- शयनकक्ष या स्नानगृह को सुगन्धित रखने के लिए
- उपहार देने के लिए
- सजावट के लिए
- सुगन्धित थैलियों के रूप में
- सुगन्धित हर्बल तकिया बनाने में

स्वयं सहायता समूह में पॉटपोरी का औद्यौगिक उत्पादन

चुकी स्वयं सहायता समूह में ज्यादाता महिलाये होती है और महिलाये रंगाई आदि कार्यो में रुचिकर एवं दक्ष होती है अतः पॉटपोरी का कार्य आसानी से हो जाने की सफल संभावना है । इसके लिए समूह के सदस्यों को उनकी रूचि एवं दक्षता के अनुसार कार्य की उपसमूहों में बांटकर पॉटपोरी का औद्यौगिक उत्पादन किया जा सकता है ।

इसके लिए निम्नलिखित कार्य हेतु उपसमूह बनाये जा सकते है –

१. मूल सामग्री एकत्रित करने हेतु
२. सामग्री को सूखने एवं रंगाई हेतु
३. मिश्रण तैयार करने हेतु
४. वजन एवं पैकिंग हेतु
५. ब्रांड का स्टिकरध लेबल लगाने हेतु
६. विपरण हेतु (सबसे महत्वपूर्ण उपसमूह)

पॉटपोरी का विपणन

उपरोक्त से उत्पादित पॉटपोरी को उसके उचित बाजार में पहुंचना, उसका कीमत निर्धारित करना, उसका ग्रेडिंग करना आदि कार्य विपणन के अंतर्गत आते है । पॉटपोरी का सबसे बड़ा बाजार सजावट बाजार है , इसका मांग उच्च वर्गीय समाज और धनी व्यक्तियों में ज्यादा है । अतः इसका इसका विपणन गाँवो की अपेक्षा शहरों में अच्छा होगा । यदि विश्व बाजार की बाजार की बात करे तो अमेरिका पॉटपोरी का सबसे बड़ा उपभोक्ता है । सामान्य बाजार में पॉटपोरी की कीमत ६०– १२०० रुपये प्रति १०० ग्राम तक इसके विभिन्न गुणवत्ता और प्रयोग किये गए सामग्री के अनुसार है । वर्त्तमान समय (कोरोना काल) में पॉटपोरी का सबसे बड़ा बाजार ई– कॉमर्स बाजार है, जहा इसकी अच्छी मांग और खपत है । अतः यदि समूह के विपणन उपसमूह को ई– कॉमर्स साइटों को चलाने का प्रशिक्षण प्रदान करा दे तो इससे उनके उत्पाद के लिए बाजार बड़ा हो जायेगा जिससे उत्पादन और लाभ भी अच्छा मिलेगा ।

कुछ प्रचलित ई–कॉमर्स साइट निम्नलिखित है–

- इंडिया मार्ट
- अमेजॉन
- फ्लिपकार्ट
- रोजमुरे

- होम सेण्टर
- एजीओ. कॉम
- श्रीश्री तत्व
- फूल

इसके अलावा भी बहुत सारे भी बहुत सारे बड़ी व्यापारी कम्पनिया है संपूर्ण विश्व में पॉटपोरी का व्यवसाय करते है ये कम्पनिया छोटे व्यापारियों से पॉटपोरी भी खरीदती है अतः समूह इनको भी अपना उत्पाद बीच सकता है ।
कुछ कम्पनिया निम्न है –

✓ गोदरेज इंटेरिओ स्टोर – चेन्नई
✓ हर्बेदी वंडर क्राफ्ट इंडिया प्राइवेट लिमिटेड – आगरा
✓ होटल गुलमर्ग – अ० मु० वि० ,अलीगढ
✓ सथ्या एक्सपोर्ट्स – दिल्ली
✓ पॉटपोरी मार्केटिंग एंड सप्लायर – तिरुवंतपुरम

इंडिया मार्ट के अनुसार केवल जनवरी– अगस्त २०२० के बिच केवल इंडिया मार्ट के सदस्यों द्वारा पॉटपोरी व्यापर में ५० लाख का टर्न ओवर किया गया । विकिपीडिया के अनुसार पॉटपोरी का जीवनअवधी २ माह से २ वर्ष तक होती है यह प्रयुक्त सामग्री और भण्डारण पर निर्भर करता है। १५ अगस्त २०२१ स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर प्रधानमंत्री जी ने बताया की केंद्र सरकार स्वयं सहायता समूह के लिए एक ई– कॉमर्स प्लेटफार्म की स्थापना करेगी जहा ये अपने उत्पाद को आसानी से बेच सकेंगे।

सरकार की एक अद्वितीय पहल

द सरस कलेक्शन, यह वाणिज्य मंत्रालय की एक पहल है इसमें ग्रामीण स्व० स०स० अपने उत्पादों को सरकारी ई – कॉमर्स प्लेटफार्म पर सरकारी खरीदारों के प्रदर्शित करते है । इसमें ५ प्रकार के वस्तुओ को रखा गया है – हस्तशिल्प, हथकरघा एवं कपड़ें, किराना एवं पाक सामग्री, व्यक्तिगत देखभाल एवं स्वच्छता सामग्री और कार्यालय सजावट उपकरण । इस प्लेटफार्म पर अभी तक ६१३ स्व० स० स० ने अपने ४०३ उत्पादों को दर्ज कराया है । इस पहल में सरकार ने यह अनिवार्य किया है कि सभी सरकारी विभाग व मंत्रालय इस ई– बाजार से जरुरत कि वस्तुए अवश्य खरीदे ।

कुछ सफलताएं

१. पी० तमिल सेल्वी (४७ वर्ष) और उनकी ६ सदस्यों (वेल्लोर जिले के केनगेयलोर में , तमिलनाडु)की स्वयं सहायता समूह जो लकड़ी के खिलौने बनाते है , उन्होंने अपनी उत्पाद को इ– कॉमर्स पर डाला और उनको बहुत ही खुशी महसूस हुई जब उन्हें इ कॉमर्स से १०० लकड़ी के गाय बनाने का आर्डर मिला ।
२. एस० हेमावती (४४ वर्ष , कट्पडी , तमिलनाडु) और उनकी समूह के सदस्य सीसे के सामने पर चित्रकारी करते है । उनको तमिलनाडु शहरी आजीविका मिशन २०१६ के तहत इ कॉमर्स का प्रशिक्षण दिया गया और उन्होंने अपनी उत्पादों को ई–कॉमर्स साइट पर डाला , आज उनका व्यापार एक अलग उचाई पर है ।

निष्कर्ष

महिलाओ के आर्थिक सशक्तिकरण में स्वयं सहायता समूह एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। यह १०–२० लोगो का समूह होता है जिसमे सदस्य अपने छोटे छोटे बचतों से एक कोष बना लेते है जिसका प्रयोग आपस में ऋण की आवस्यकताओ की पूर्ति के लिए या कोई व्यापार में निवेश हेतु करते है। इसके सदस्य सामान्य कोष का निवेश करके अनेक लघु व्यवसाय चलाते है और लाभ प्राप्त करते है। पोटपोरी का व्यवसाय भी एक ऐसा व्यवसाय है जिसमे निवेश छोटे और कार्य आसान होता है, अतः यह स्वयं सहायता समूह में किये जाने के लिए उपयुक्त व्यवसाय है। समूह में पोटपोरी का उत्पादन बहुत ही आसान है तथा इसमें अच्छे लाभ के भी आसार है। इसका विपणन सजावट बाजार में अच्छा होता है अतः इसकी मांग शहरों में ज्याद है। समूह के सदस्यों को ई – कॉमर्स का प्रशिक्षण देकर इसे ऑनलाइन बाजार में भी बेचा जा सकता है जहा इसके अच्छी मांग है और कीमत भी अच्छा मिल जाता है । इस परिपेक्ष में सरकार द्वारा भी अनेक उचित पहल किये गए है और अनेक कार्यक्रम भी चलाये जा रहे है जिनका उपयोग करके पोटपोरी के व्यवसाय को अच्छा चलाया जा सकता है और महिलाये अच्छा लाभ प्राप्त करेगी जिससे वे आत्मनिर्भर और सशक्त बनेगी और अपने परिवार, समाज और राष्ट्र के विकाश में अपना सहयोग दे सकेंगी।

संदर्भ

1. मैकक्यूएन, मार्ज (1985, सितंबर)। पोटपुरी और सुगंध उ।ान। सफोक लिविंग। कॉर्नेल कोऑपरेटिव एक्सटेंशन – सफोक काउंटी
2. न्यू गार्डन लैंडस्केपिंग और नर्सरी। (उत्तर)। सूचना पत्ररू हर्ब गार्डन के विचार। ग्रीन्सबोरो, उत्तरी कैरोलिनारू न्यू गार्डन लैंडस्केपिंग और नर्सरी। https://newgarden-comb से लिया गया।
3. कॉर्नेल विश्ववि।ालय, बागवानी विभाग। (उत्तर)। पोटपुरी बनाना। http://www-hort-cornell-edu/gbl से लिया गया।
4. पवनजोत कौर और रूपपाल कौर (2015)। भारत में स्वयं सहायता समूहों के माध्यम से ग्रामीण महिलाओं का सशक्तिकरण। ज्ञान ज्योति ई–जर्नल, 5(1), 39–44A http://www-gjimt-ac-in/gianjyoti&e&journal/ से लिया गया।

5. आर. के.यादव, आर. के. गोयल, एस. एस. धनखड़, (2014)। बागवानी फसलों की कटाई–पश्चात तकनीक (प्रशिक्षण नियमावली, 10–21 फरवरी, 2014)। परामर्श एवं प्लेसमेंट केंद्र, छात्र कल्याण निदेशालय और बागवानी विभाग, सीसीएस हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, भारत।
6. ए के पांडे, घन श्याम अब्रोल, अमित कुमार सिंह और गौरव शर्मा (2021)। फलों और सब्जियों के प्रसंस्करण में हालिया प्रगति। उद्यान एवं वानिकी महाविद्यालय, रानी लक्ष्मी बाई केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय, झाँसी–284003।
7. सुश्री पूर्णिमा विजयकुमार, क्रिस्टीना अरूजिस और प्रीमल मारिया डिसूजा । कर्नाटक के ग्रामीण जिलों के विशेष संदर्भ में स्वयं सहायता समूहों के माध्यम से महिला सशक्तिकरण पर एक तुलनात्मक अध्ययन (विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, दक्षिण पश्चिमी क्षेत्रीय कार्यालय, बैंगलोर को अंतिम रिपोर्ट प्रस्तुत)। सेंट जोसेफ कॉलेज ऑफ कॉमर्स (स्वायत्त)।
8. विकिपीडि। पॉटपोरी https://en-wikipedia-org/wiki/Potpourri से प्राप्त किया गया।